किशोरों की पालन–पोषण शैली पर आवासीय क्षेत्र का प्रभाव

पूजा पाण्डे
शोध छात्रा, मनोविज्ञान विभाग सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा

मधुलता नयाल
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखंड के कुमाऊँ मण्डल के 3 जिलों में किया गया। इस अध्ययन में 300 *किशोर–किशोरियों को बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रुप में चयन किया गया तथा फिर इनमें से 150 ग्रामीण क्षेत्र के* ***(75 किशोर एवं 75 किशोरियॉ)*** *तथा 150 शहरी क्षेत्र के* ***(75 किशोर एवं 75 किशोरियॉ)*** *का चयन किया गया। आंकड़ों के संग्रहण के लिये दुबे (2006) द्वारा निर्मित अवसाद मापनी तथा गुप्ता एवं मेहतानी (2017) द्वारा निर्मित पालन–पोषण शैली मापनी प्रयुक्त की गयी। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, प्रसरण विश्लेषण एवं सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। तथा परिणाम में, विभिन्न समूहों के मध्य लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से अन्तर नहीं पाया गया। विभिन्न आवासीय क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) के मध्य लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली में भी सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया किन्तु लिंग के आधार पर, असंबद्ध पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से अन्तर पाया गया। आवासीय क्षेत्र एवं लिंग के मध्य लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली के लिए पारस्परिक अंतःक्रिया नहीं पाई गयी। साथ ही, अवसाद एवं लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली के मध्य नकारात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया।*

प्रयुक्त शब्द : *किशोर, अवसाद, पालन–पोषण शैली, लिंग एवं आवासीय क्षेत्र*

---

१. प्रस्तावना

अत्यन्त पुरानी कहावत है कि आज का बालक कल का भविष्य होता है परन्तु वह आज का वर्तमान भी है। जीवन की परिस्थितियॉ, आवश्यकताऐं व प्राथमिकताऐं सदैव परिवर्तित होते रहती है और यह परिवर्तन प्रत्येक अवस्था पर लागू होता है, जिसमें सर्वाधिक संवेदनशील कही जाने वाली किशोरावस्था के लिए परिवर्तन की प्रक्रिया अत्यन्त प्रभावपूर्ण होती है।

किशोरावस्था मानव विकास का समय है जो कि बाल्यावस्था के बाद तथा वयस्कावस्था से पहले पाया जाता है। यह एक ऐसी अवस्था होती है जहॉं पर मानव जिंदगी में तेज बदलाव होते हैं तथा दैहिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक विकास भी इसी महत्वपूर्ण अवस्था के दौरान होते हैं। बाल्यावस्था से किशोरावस्था के स्तर में परिवर्तन से युवा किशोरों में अत्यन्त तीव्र एवं तनावयुक्त अनुभव होते हैं। विकासात्मक रुप से, वह अपनी जिंदगी के एक ऐसे दौर में प्रवेश करते हैं जहां उनकी शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक तथा सामाजिक विशेषताऐं विकसित होती हैं। किशोरावस्था सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय होता है। भावों के साथ–साथ बालक की

कल्पना का भी विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौन्दर्य की रुचि उत्पन्न होती है और बालक इसी समय नये व ऊँचे–ऊँचे आदर्शों को अपनाता है। बालक भविष्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रुपरेखा उसके किशोरावस्था में बन जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं अक्सर प्रारंभिक किशोरावस्था के दौरान उभरती हैं, जिसमें अवसाद सबसे आम है **थापर (2012), केसलर एवं ब्रोमेट (2013), बिरमाहेर (1996)**। इसके उच्च प्रसार, पुनरावृत्ति और हानि के जोखिम के कारण, अवसाद का सार्वजनिक स्वास्थ्य पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है और यह एक संभावित दीर्घकालिक बोझ है **एंडरसन एवं टीचर (2008), हैंकिन एवं अन्य (2007).** अधिकांश समुदाय आधारित अध्ययनों में बताया गया है कि अवसाद सबसे आम मानसिक विकार है। लोग मनोचिकित्सक के पास क्यों आते हैं, इसका सबसे आम कारण अवसाद रहा है, हालांकि आम आदमी की धारणा यह है कि सभी मनोवैज्ञानिक समस्याएं अवसाद हैं **केसलर एवं अन्य (2003), रॉबिन्स एवं रेगियर (2004)।** व्यक्ति को जब कोई हानि होती है, या वह असफलता का अनुभव करता है, अथवा किसी दुखद या नकारात्मक घटना का सामना करता है तो उसमें उदासी एवं तनाव के लक्षण दिखाई पड़ सकते हैं। ऐसी मनोदशा को ही अवसाद कहा जाता है। इसका व्यक्ति के व्यवहार एवं समायोजन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है **सिंह एवं अन्य (2014–15)।** भारत के अध्ययनों से भी पता चला है कि अवसाद की शुरुआत से पहले की अवधि के दौरान जीवन की घटनाएं अवसाद में एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं। महिलाओं पर किए गए अध्ययनों ने पारस्परिक संघर्ष, वैवाहिक असंगति और यौन जबरदस्ती जैसे जोखिम कारकों की पहचान करने के महत्व को भी बताया है **ग्रीनबर्ग एवं अन्य (2009), ब्लेयर–वेस्ट एवं अन्य (2010)।**

किशोर बालक का बौद्धिक विकास पर्याप्त होता है, उसकी चिन्तन शक्ति अच्छी होती है। इसके कारण उन्हें पर्याप्त बौद्धिक कार्य देना आवश्यक होता है। किशोरों की सामाजिक भावना प्रबल होती है, वह समाज में सम्मानित रहकर ही जीना चाहता है। इसलिए वह अपने अभिभावकों से भी सम्मान की आशा करता है। **शर्मा एवं पाण्डे (2015)** ने पालन–पोषण की शैलियों और भारत में किशोरों के आत्मसम्मान पर इसके प्रभाव का एक अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि किशोरों के आत्मसम्मान का माता और पिता दोनों के पालन–पोषण के मामले में अनुज्ञात्मक और प्राधिकारिक पालन–पोषण के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था। किशोरों के सर्वांगीण विकास में माता–पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक के जीवन पर माता–पिता का मुख्य प्रभाव होता है। वे न केवल बालक का शारीरिक रुप से पालन–पोषण करते हैं, बल्कि उनके पालन–पोषण की शैली बालक के मानस के विकास में योगदान करती है। **गोरोस्तियागा एवं अन्य (2019)** ने अपने अध्ययन के परिणाम में बताया कि माता–पिता की सौहार्दता, व्यवहार नियंत्रण और स्वायत्तता प्रदान करना किशोरों में आंतरिक लक्षणों से विपरीत रुप से संबंधित है। इसके विपरीत, माता–पिता द्वारा मनोवैज्ञानिक नियंत्रण और कठोर नियंत्रण सकारात्मक रुप से किशोर चिंता, अवसाद और आत्महत्या से जुड़ा हुआ है। **बार्को एवं अन्य (2019)** ने स्पेनिश किशोरों के बीच माता–पिता के मनोवैज्ञानिक नियंत्रण और भावनात्मक व व्यवहार संबंधी विकारों का अध्ययन किया। यह अध्ययन कथित मनोवैज्ञानिक नियंत्रण के महत्व पर नई जमीन को तोड़ता है, जिसे माता–पिता बच्चों और किशोरों के बीच भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकारों में नकारात्मक नियंत्रण मानते हैं।

पालन–पोषण शैली किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण निर्धारकों में से एक है **रेजवान एवं डिसूजा (2017).** यह माता–पिता द्वारा उपयोग किए जाने वाले बच्चों के पालन–पोषण के प्रयासों के लिए मानक रणनीतियों का मनोवैज्ञानिक विवरण है **आदिमोरा एवं अन्य (2015).** माता–पिता

के द्वारा बच्चों का पालन–पोषण उनके विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। **यास्मीन (2019)** ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर पालन–पोषण शैलियों के बीच लिंग अंतर का अध्ययन किया और परिणाम में देखा गया कि माताऐं बेटों के प्रति अधिक प्राधिकारिक हैं, लेकिन पुरुष और महिला बच्चों के लिए माताओं की प्राधिकारिकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। पुरुषों और महिलाओं के लिए माताओं की अनुज्ञात्मकता में कोई अन्तर नहीं है। माता–पिता ने किस तरह से अपने बच्चे की परवरिश की है, तथा वह किस तरह से उसके साथ व्यवहार करते हैं, इसका प्रभाव भी बच्चे पर पड़ता है। बाल्यावस्था में जिस तरह के संस्कार या जिस तरह का व्यवहार बच्चे के साथ किया जाता है, वही व्यवहार बच्चा सीख जाता है तथा बड़े होकर भी उसे उसी तरह का व्यवहार करते देखा जाता है, क्योंकि बाल्यावस्था में किए गए जिन व्यवहार व आदतों की नींव बच्चे में पड़ जाती है, बालक उसे सीख लेता है व ऐसा ही व्यवहार वह बड़े होकर करता है। उसका व्यक्तित्व उसी तरह का हो जाता है। **राजन एवं रीमा (2022)** के अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में आत्म–सम्मान पर कथित पालन–पोषण शैली के प्रभाव की जॉच करना था। निष्कर्षों से पता चला कि खराब निगरानी का शारीरिक दंड और असंगत अनुशासन के साथ महत्वपूर्ण संबंध है जो युवा किशोरों के आत्मसम्मान को प्रभावित करता है। भागीदारी पालन–पोषण शैली का आत्म–सम्मान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। पालन–पोषण बच्चों के व्यवहार और विकास का नियमन है। इस इरादे के साथ कि वे सामाजिक रुप से वांछनीय जीवन जी सकें, अपने वातावरण के अनुकूल हों और अपने लक्ष्य का पीछा कर सकें। **ब्रैडली एवं काल्डवैल (1995) के अनुसार** यह एक समाजीकरण प्रकिया है, जिसके माध्यम से माता–पिता अपने सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों, परम्पराओं एवं मानदंडों के साथ–साथ अन्य सामाजिक और सांस्कृतिक रुप से वांछनीय व्यवहार को अपने बच्चों को हस्तांतरित करते हैं।

पालन–पोषण शैली उस शैली को संदर्भित करती है जिसमें माता–पिता अपने बच्चों का मार्गदर्शन करते हैं और उन्हें अपने व्यवहार को विनयमित करने में मदद करते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक निर्माण है जिसमें माता–पिता के व्यवहार और दृष्टिकोण के अनुरुप ढांचा होता है, जिसके साथ माता–पिता एक एकल कार्य के बजाय अपने बच्चों के साथ बातचीत व व्यवहार करते हैं जो एक बच्चे के व्यवहार को आकार देते हैं। **होघुइघी एवं लौंग (2004)** ने बताया कि सकारात्मक पालन–पोषण का परिणाम एक स्वस्थ और सम्पन्न छात्र है। **जिनान एवं अन्य (2022)** ने विभिन्न प्रकार की पालन–पोषण शैलियों और किशोरों के आत्म सम्मान पर उनके प्रभाव पर चर्चा करने के लिए एक सर्वोत्तम साक्ष्य समीक्षा की। इस समीक्षा के परिणाम से पता चला कि आत्म सम्मान का प्राधिकारिक और अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैलियों के साथ सीधा और सकारात्मक संबंध है।

२. उद्देश्य

१.आवासीय क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर वर्गीकृत समूहों में लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली में अन्तर ज्ञात करना।

२.आवासीय क्षेत्रों का किशोरों के लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली पर अन्तर ज्ञात करना।

३.पुरुष एवं महिला किशोरों का लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली पर अन्तर ज्ञात करना।

४.आवासीय क्षेत्र एवं लिंग के मध्य लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुमेय एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली के लिए अन्तःक्रिया ज्ञात करना।

५.किशोरों में लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुमेय, असंबद्ध पालन–पोषण शैली, अवसाद एवं इनके विभिन्न आयामों के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना।

३. परिकल्पनाएं

H_1:आवासीय क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर वर्गीकृत समूहों में लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली में सार्थक अन्तर होगा।

H_2:आवासीय क्षेत्रों का किशोरों के लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली पर सार्थक अन्तर होगा।

H_3:पुरुष एवं महिला किशोरों का लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली पर सार्थक अन्तर होगा।

H_4:आवासीय क्षेत्रों एवं लिंग के मध्य लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुमेय एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली के लिए सार्थक पारस्परिक अन्तःक्रिया होगी।

H_5:किशोरों में लोकतांत्रिक, निरंकुश, अनुमेय, असंबद्ध पालन–पोषण शैली, अवसाद एवं इनके विभिन्न आयामों के मध्य सार्थक सहसंबंध होगा।

४.विधि

४.१ प्रतिदर्श

इस अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 300 किशोर–किशोरियों को बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रुप में चयन किया गया। इसमें प्रथम स्तर पर, उत्तराखंड के कुमाऊँ मण्डल के 3 जिलों का चयन यादृच्छिक रुप से किया गया। द्वितीय स्तर पर, उन 3 जिलों में कुछ ग्रामीण एवं कुछ शहरी क्षेत्रों का चयन किया गया। तृतीय स्तर पर, उन क्षेत्रों में से यादृच्छिक रुप से विभिन्न इण्टरमीडिएट विद्यालयों का चयन किया गया तथा चतुर्थ स्तर पर, व्यक्तिगत प्रदत्त अनुसूची के अनुसार यादृच्छिक रुप से 11वीं तथा 12वीं कक्षा में अध्ययनरत 150 ग्रामीण क्षेत्र के **(75 किशोर एवं 75 किशोरियों)** तथा 150 शहरी क्षेत्र के **(75 किशोर एवं 75 किशोरियों)** का चयन उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति को नियंत्रित कर किया गया।

४.२ उपकरण

प्रदत्त संग्रह हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1.**व्यक्तिगत प्रदत्त अनुसूची** के आधार पर प्रयोज्य के लिंग, आवासीय क्षेत्र तथा कक्षा का पता लगाया गया।

2.**अवसाद मापनी** – इस मापनी का निर्माण दुबे (2006) के द्वारा अवसाद के मापन के लिए किया गया है। इस मापनी में 50 कथन हैं तथा यह 2 बिंदु मापनी है। इसकी विश्वसनीयता परीक्षण पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा .64 तथा अर्द्ध विच्छेद विधि द्वारा .69 है। तथा इसकी वैधता 0.41 तथा 0.39 है।

3.**पालन–पोषण शैली मापनी** – इस मापनी का निर्माण गुप्ता एवं मेहतानी (2017) के द्वारा किशोरों के पालन–पोषण शैली के मापन के लिए किया गया है। इस मापनी में 44 कथन हैं तथा यह 5 बिंदु मापनी है। इसमें पालन–पोषण के स्तर का मापन चार प्रकार के आयामों में किया गया है। इसकी विश्वसनीयता परीक्षण पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा .91 तथा अर्द्ध विच्छेद विधि द्वारा .79 है। तथा इसका वैधता विस्तार .51 से .82 है।

४.३ प्रकिया

सर्वप्रथम यादृच्छिक रुप से विभिन्न विद्यालयों का चयन किया गया तथा फिर उन विद्यालयों में जाकर वहां से किशोर–किशोरियों का चयन शोधकर्ता द्वारा प्रशासित की गयी व्यक्तिगत प्रदत्त अनुसूची द्वारा उसमें निर्मित (नाम, कक्षा, लिंग, ग्रामीण/शहरी) को नियंत्रित कर किया गया। जिससे कि हमें ऐसे विद्यार्थी मिल सकें जो इस शोध प्रतिदर्श की आवश्यकता को पूर्ण कर सके। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिये द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण एवं पीयरसन गुणनफल आघूर्ण सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया।

५. परिणाम एवं व्याख्या

तालिका 1 वर्णनात्मक सांख्यिकी

		ग्रामीण (A_1)		शहरी (A_2)	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली	पुरुष (B_1)	32.77	6.349	32.39	6.424
	महिला (B_2)	33.03	5.763	33.16	7.779
निरंकुश पालन–पोषण शैली	पुरुष (B_1)	27.04	6.701	28.97	5.209
	महिला (B_2)	27.80	5.971	28.03	6.924
अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली	पुरुष (B_1)	21.95	6.615	21.27	6.993
	महिला (B_2)	21.56	6.442	22.40	6.782
असंबद्ध पालन–पोषण शैली	पुरुष (B_1)	14.73	7.464	13.16	7.548
	महिला (B_2)	16.41	7.077	14.89	7.977

तालिका : 2 लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली का प्रसरण विश्लेषण

विचरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्ग योग	मध्यमान वर्ग	एफ–मूल्य	सार्थकता स्तर .05
समूहों के मध्य	3	26.037	8.679	.198	असार्थक
आवासीय क्षेत्र (A)	1	1.203	1.203	.027	असार्थक
लिंग (B)	1	19.763	19.763	.451	असार्थक
अंतकिया (AxB)	1	5.070	5.070	.116	असार्थक
त्रुटि	296	12972.960	43.828	––	––

तलिका 2 से स्पष्ट होता है कि समूहों के मध्य लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया, जिसके आधार पर परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है। तालिकाओं से यह भी ज्ञात होता है कि आवासीय क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण (A_1) व शहरी (A_2) में, लिंग के आधार पर पुरुषों (B_1) एवं महिलाओं (B_2) में तथा विभिन्न प्रकार के आवासीय क्षेत्र तथा लिंग में परस्पर अंतःक्रिया में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना 2, 3 तथा 4 भी अस्वीकृत की जाती है।

तालिका : 3 निरंकुश पालन–पोशण शैली का प्रसरण विश्लेषण

विचरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्ग योग	मध्यमान वर्ग	एफ–मूल्य	सार्थकता स्तर .05
समूहों के मध्य	3	142.747	47.582	1.223	असार्थक
आवासीय क्षेत्र (A)	1	87.480	87.480	2.248	असार्थक
लिंग (B)	1	.653	.653	.017	असार्थक
अंतकिया (AxB)	1	54.613	54.613	1.404	असार्थक
त्रुटि	296	11516.773	38.908	––	––

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि समूहों के मध्य निरंकुश पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया, जिसके आधार पर परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है। तालिकाओं से यह भी ज्ञात होता है कि आवासीय क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण (A_1) व शहरी (A_2) में, लिंग के आधार पर पुरुषों (B_1) एवं महिलाओं (B_2) में तथा साथ ही, विभिन्न प्रकार के आवासीय क्षेत्र तथा लिंग में परस्पर अंतःक्रिया में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना 2, 3 तथा 4 भी अस्वीकृत की जाती है।

तालिका : 4 अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली का प्रसरण विश्लेषण

विचरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्ग योग	मध्यमान वर्ग	एफ–मूल्य	सार्थकता स्तर .05
समूहों के मध्य	3	54.253	18.084	.402	असार्थक
आवासीय क्षेत्र (A)	1	.480	.480	.011	असार्थक
लिंग (B)	1	10.453	10.453	.232	असार्थक
अंतकिया (AxB)	1	43.320	43.320	.962	असार्थक
त्रुटि	296	13330.933	45.037	––	––

तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि समूहों के मध्य अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया, जिसके आधार पर परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है। तालिकाओं से यह भी ज्ञात होता है कि आवासीय क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण (A_1) व शहरी (A_2) में, लिंग के आधार पर पुरुषों (B_1) एवं महिलाओं (B_2) में तथा साथ ही, विभिन्न प्रकार के आवासीय क्षेत्र तथा लिंग में परस्पर अंतःक्रिया में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना 2, 3 तथा 4 भी अस्वीकृत की जाती है।

तालिका : 5 असंबद्ध पालन–पोषण शैली का प्रसरण विश्लेषण

विचरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्ग योग	मध्यमान वर्ग	एफ–मूल्य	सार्थकता स्तर .05
समूहों के मध्य	3	397.920	132.640	2.343	असार्थक
आवासीय क्षेत्र (A)	1	179.413	179.413	3.170	असार्थक
लिंग (B)	1	218.453	218.453	3.859	सार्थक
अंतकिया (AxB)	1	.053	.053	.001	असार्थक
त्रुटि	296	16754.080	56.602	––	––

तालिका 5 से स्पष्ट होता है कि समूहों के मध्य असंबद्ध पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया, जिसके आधार पर परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है। तालिकाओं से यह भी ज्ञात होता है कि आवासीय क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण (A_1) व शहरी (A_2) में असंबद्ध पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना 2 अस्वीकृत की जाती है तथा लिंग के आधार पर पुरुषों (B_1) एवं महिलाओं (B_2) में असंबद्ध पालन–पोषण शैली में सार्थक रुप से अन्तर पाया गया। इसके आधार पर परिकल्पना 3 स्वीकृत की जाती है। साथ ही, विभिन्न प्रकार के क्षेत्र वर्ग तथा लिंग में परस्पर अंतःक्रिया में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना 4 अस्वीकृत की जाती है।

तालिका : 6 किशोरों के लिए सहसंबंध मैट्रिक्स (N=300)

	अवसाद (X_1)	लोकतांत्रिक (X_2)	निरंकुश (X_3)	अनुज्ञात्मक (X_4)	असंबद्ध (X_5)
अवसाद (X_1)					
लोकतांत्रिक (X_2)	-.126*				
निरंकुश (X_3)	.043	.409**			
अनुज्ञात्मक (X_4)	.005	.273**	.284**		
असंबद्ध (X_5)	.101	-.107	.132*	.443**	

*** .05 स्तर पर – .113 सार्थकता मूल्य**
**** .01 स्तर पर – .148 सार्थकता मूल्य**

तालिका 6 में देखा गया कि .05 स्तर पर, अवसाद का लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली के साथ नकारात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया तथा निरंकुश पालन–पोषण शैली का असंबद्ध पालन–पोषण शैली के साथ सकारात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया। साथ ही .01 स्तर पर, लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली का निरंकुश पालन–पोषण शैली व अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली के साथ, निरंकुश पालन–पोषण शैली का अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली के साथ तथा अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली का असंबंध पालन–पोषण शैली के साथ सकारात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया।

इसके अतिरिक्त, अवसाद का निरंकुश, अनुज्ञात्मक एवं असंबद्ध पालन–पोषण शैली के साथ तथा लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली का असंबद्ध पालन–पोषण शैली के साथ सार्थक रुप से कोई सहसंबंध नहीं पाया गया। इसके आधार पर परिकल्पना 5 आंशिक रुप से स्वीकृत की जाती है।

६. लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली की व्याख्या

अध्ययन के परिणामों में, समूहों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया, क्योंकि सभी समूह समान रुप से लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली को प्रभावित कर रहे हैं। जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आधुनिकता के परिदृश्य में आजकल के माता–पिता भी समय के अनुरुप हो गये हैं, उनकी चिन्तन शक्ति, रहन–सहन, खान–पान, पहनावा आदि सभी समय के अनुरुप हो गया है। इसलिए उन्हें पता है कि सभी के हितों और अपने बच्चों की भलाई के लिए उनसे कैसे बातचीत करनी चाहिए। वह अपने बच्चों के साथ सकारात्मक रिश्ते बनाए रखने के लिए बहुत मेहनत करते हैं। वे अपने बच्चों के साथ खुलकर बात करते हैं और उन्हें सुनते हैं, उन्हें खुद को अभिव्यक्त करने का अवसर देते हैं, उनके महत्वपूर्ण सोच और अच्छे कार्यों को बढ़ावा देते हैं इत्यादि। इस प्रकार का पारिवारिक वातावरण युवा व्यक्तियों को कुछ सीमाओं के भीतर खुद पर

भरोसा करने और एक स्वस्थ स्वायत्तता विकसित करने के अवसर प्रदान करता है **(कोपको, 2007)**। विकासात्मक मनोवैज्ञानिक इस बात की पुष्टि करते हैं कि बच्चों, विशेष रुप से किशोरों की परवरिश के लिए सबसे उपयुक्त पालन–पोषण शैली लोकतांत्रिक शैली है **(स्टाइनबर्ग, 2001)**।

परिणामों में यह भी देखा गया कि लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली में आवासीय क्षेत्रों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। इनके मध्य अंतर ना आने का कारण यह हो सकता है कि जो भी आधुनिकता समाज में आई है तथा जितनी भी नई तकनीकों का विकास हुआ है, उन सबका प्रभाव ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों पर लगभग बराबर मात्रा में ही पड़ा है। जितने आधुनिक शहरी माता–पिता हैं, शायद अब ग्रामीण माता–पिता भी उनके समकक्ष आधुनिक हो गए हैं क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में भी अब सभी प्रकार की सुविधाऐं उपलब्ध हो गई हैं। यह संभव है कि लोकतांत्रिक माता–पिता वाले बच्चे सामाजिक, स्वायत्त और अत्यधिक जिम्मेदार हों **(बॉमरिंड, 1991)**। इसलिए लोग इस प्रकार की पालन–पोषण शैली को अधिक अपनाने लगे हैं।

परिणामों में, लिंग के मध्य भी सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आजकल के समय में चाहे लड़का हो या लड़की, समाज में उन्हें समान नजरिए से ही देखा जा रहा है तथा साथ ही अधिकतर माता–पिता द्वारा भी उनके साथ समान रुप से व्यवहार किया जा रहा है। उनके साथ हर विषय को लेकर खुलकर बात की जाने लगी है। लड़कों के साथ–साथ लड़कियों को भी खुद को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया जा रहा है तथा साथ ही उनके कार्य को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

परिणामों के आधार पर लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली में क्षेत्र तथा लिंग के मध्य परस्पर अंतःक्रिया में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। क्योंकि क्षेत्र तथा लिंग समान रुप से लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली को प्रभावित कर रहे हैं।

७. निरंकुश पालन–पोषण की व्याख्या

अध्ययन के परिणामों में, समूहों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया, क्योंकि सभी समूह समान रुप से निरंकुश पालन–पोषण शैली को प्रभावित कर रहे हैं। इनके मध्य अंतर ना आने का कारण यह हो सकता कि इस आधुनिक समय में भी कई माता–पिता ऐसे हैं जो अपने बच्चों पर कड़ा नियंत्रण रखते हैं तथा बच्चों को अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक या खुलकर व्यक्त नहीं करने देते, उन्हें अपनी इच्छाओं को प्रकट नहीं करने देते तथा यह अपने अधिकार एवं अनुशासन को ही सर्वोच्च महत्व देते हैं। निरंकुश माता–पिता ''आप ऐसा करेंगे, क्योंकि मैं ऐसा कहता हूं'' जैसे भावों का उपयोग कर सकते हैं। इन व्यवहारों के कारण किशोर आश्रित और विद्रोही हो सकते हैं। विद्रोही किशोर आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, जबकि आज्ञाकारी/विनम्र किशोर अपने परिवारों पर निर्भर हो सकते हैं **(बॉमरिंड, 1991)**। हालांकि इस तरह के व्यवहार के पीछे कई तरह के कारण हो सकते हैं, लेकिन आजकल के समय में भी कई लोग इस तरह की पालन–पोषण शैली को अपनाते मिल ही जाते हैं।

परिणामों में यह भी देखा गया कि निरंकुश पालन–पोषण शैली में आवासीय क्षेत्रों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। जिसका संभावित कारण ग्रामीण तथा शहरी दोनों ही क्षेत्रों के कई माता–पिता द्वारा इस तरह का व्यवहार करना हो सकता है जो बच्चों पर कड़ा नियंत्रण या अनुशासन प्रदर्शन करते हैं। क्योंकि उन्हें बच्चों की पालन–पोषण शैली का उनके भविष्य में पड़ने

वाले प्रभाव को लेकर सूचना ज्ञात नहीं होती कि उनके द्वारा बचपन में किए गए व्यवहार का बच्चों के भविष्य में क्या प्रभाव पड़ सकता है तथा उन्हें किन–किन तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे व्यवहारों से उनमें चिंता, तनाव, कुंठा आदि कई तरह के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं तथा ऐसे बच्चों में आत्म संप्रत्यय से जुड़ी बहुत सी समस्याऐं भी पैदा हो सकती हैं।

परिणामों में, निरंकुश पालन–पोषण शैली में लिंग के मध्य भी सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। इनके मध्य अंतर ना आने का कारण यह हो सकता है कि माता–पिता के लिए यहॉं पर इनका अधिकार व अनुशासन ही सर्वोच्च होता है तथा उन्हें यह पता नहीं होता कि इस तरह के व्यवहार से उनके बच्चों में आगे चलकर क्या–क्या समस्याऐं उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए लड़का हो या लड़की दोनों के मध्य भेदभाव न करते हुए दोनों के साथ समान रुप से व्यवहार किया जाता है।

परिणामों के आधार पर निरंकुश पालन–पोषण शैली में क्षेत्र तथा लिंग के मध्य परस्पर अंतःक्रिया में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। क्योंकि क्षेत्र तथा लिंग समान रुप से निरंकुश पालन–पोषण शैली को प्रभावित कर रहे हैं।

८. अनुज्ञात्मक पालन–पोषण की व्याख्या

अध्ययन के परिणामों में, समूहों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया, क्योंकि सभी समूह समान रुप से अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली को प्रभावित कर रहे हैं। हालांकि इस तरह की पालन–पोषण शैली कम ही माता–पिता द्वारा अपनाई जाती है, जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि उन माता–पिता को लगता है बच्चों को स्वतंत्रता प्रदान करना, उनका दोस्त बन कर रहना या उनके प्रति बहुत ही शांतचित्त दृष्टिकोण अपनाना एक अच्छी पालन–पोषण शैली का उदाहरण है तथा इस तरह का व्यवहार उनके बच्चों में आत्मविश्वास व उनके साथ एक सकारात्मक संबंध बनाने में सहयोगी हो सकता है। लेकिन अक्सर यह देखा गया है कि ऐसे माता–पिता के बच्चों को शिक्षा से जुड़े क्षेत्र में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है तथा वे प्राधिकार के साथ काम करने में असफल महसूस करते हैं। **लुयक्कस एवं अन्य (2011)** के अनुसार, अनुज्ञात्मक माता–पिता के बच्चे समय के साथ असामाजिक व्यवहार में अधिक गंभीर वृद्धि प्रदर्शित करते पाए गए हैं। **फ्लेचर एवं अन्य (2009),** अनुज्ञात्मक माता–पिता वाले बच्चों पर दंडात्मक अनुशासन का अधिक उपयोग भी अधिक बाहरी समस्याओं से जुड़ा हुआ है।

परिणामों में यह भी देखा गया कि अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली में आवासीय क्षेत्रों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में कुछ माता–पिता की अभिवृत्ति इस प्रकार की है कि वह बच्चों के साथ एक अभिभावक न होकर एक दोस्त की भूमिका निभाने की कोशिश करते हैं। इसी कारण वह अपने बच्चों के साथ अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली को अपनाने लगे हैं। **शेफर एवं अन्य (2009),** मातृ अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली युवा वयस्कता में सहानुभूति और असामाजिक व्यवहार के निम्न स्तर में योगदान करने के लिए पाई गई है।

परिणामों में, अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली में लिंग के मध्य भी सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। इसका संभावित कारण भी लड़का व लड़की के मध्य भेदभाव न होना (लिंग समानता)

हो सकता है। माता–पिता लड़कियों के साथ भी उसी तरह का व्यवहार करने लगे हैं जैसा कि वह लड़कों के साथ करते हैं।

परिणामों के आधार पर अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली में क्षेत्र तथा लिंग के मध्य परस्पर अंतःक्रिया में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। क्योंकि क्षेत्र तथा लिंग समान रुप से अनुज्ञात्मक पालन–पोषण शैली को प्रभावित कर रहे हैं।

९. असंबद्ध पालन–पोषण की व्याख्या

अध्ययन के परिणामों में, समूहों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आजकल के समय में सभी अपने–अपने कार्यों में बहुत अधिक व्यस्त हैं, किसी पर अधिक से अधिक धन कमाने का दबाव है तो किसी पर अत्यधिक कार्य का बोझ है। इस वजह से ऐसे अनेक माता–पिता अपने बच्चों की ओर कम ध्यान दे पाते हैं, जिससे कि उनके बीच एक दूरी सी बन जाती है। असंबद्ध पालन–पोषण शैली को निम्न स्तर के नियंत्रण तथा बच्चों पर मांगों के रुप में परिभाषित किया जा सकता है, जबकि सौहार्दपूर्णता के निम्न स्तर भी हो सकते हैं **(स्पेरा, 2005)**। इस पालन–पोषण शैली का एक सकारात्मक प्रभाव यह है कि यह एक बच्चे को अधिक आत्मनिर्भर और बेहतर निर्णय लेने वाला बना सकता है।

परिणामों में यह भी देखा गया कि असंबद्ध पालन–पोषण शैली में आवासीय क्षेत्रों के मध्य सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। जिसका संभावित कारण माता–पिता में कार्य का दबाव व बच्चों में ध्यान केन्द्रित करने के लिए बहुत कम समय हो सकता है, जो कि आजकल ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में देखने को मिल रहा है। क्योंकि शहरी क्षेत्रों में माता व पिता दोनों अपने–अपने व्यवसाय में व्यस्त हैं व ग्रामीण क्षेत्रों में भी माता–पिता में नौकरी के अलावा अन्य घरेलू कार्यों का दबाव है व साथ ही उनमें शिक्षा का भी अभाव है, जो उन्हें इस तरह की पालन–पोषण शैली को अपनाने के लिए मजबूर करता है।

परिणामों में, असंबद्ध पालन–पोषण शैली में लिंग के मध्य सार्थक रुप से अन्तर पाया गया। क्योंकि अभी भी कुछ माता–पिता लड़के व लड़कियों के मध्य लिंग अन्तर करते हैं, जिसकी वजह से उनके द्वारा दोनों की पालन–पोषण शैली में भी अन्तर आ जाता है। हालांकि माता–पिता अपने–अपने कार्यों के कारण या कई अन्य कारणों से बच्चों की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते, फिर भी लड़कियों के लिए इस तरह की पालन–पोषण शैली लड़कों की अपेक्षा कुछ अधिक देखने को मिलती है।

परिणामों के आधार पर असंबद्ध पालन–पोषण शैली में क्षेत्र तथा लिंग के मध्य परस्पर अंतःक्रिया में सार्थक रुप से कोई अन्तर नहीं पाया गया। क्योंकि क्षेत्र तथा लिंग समान रुप से असंबद्ध पालन–पोषण शैली को प्रभावित कर रहे हैं।

References

1.Adimora, D.E., Nwokenna, E.N., Omeje, J.C. & Umeano, E.C. (2015). Parenting Styles and Attention Deficit Hyperactivity Disorder as Correlates of Academic Adjustment of In-School Adolescents in Enugu State, Nigeria. Procedia – Social and Behavioral Sciences, 205, 702-708.

2.Almeida, D.M. & Galambos, N.L. (1991). Encyclopedia of Psychology. vol. 1 Wiley – Inter Science Publication.

3.Andersen, S.L. & Teicher, M.H. (2008). Stress, sensitive periods and maturational events in adolescent depression. Trends in Neurosciences, 31(4), 183-191.

4.Barco, B.L., Lazaro, S.M., Maria, I.P.R. & Victor, M.L.R. (2019). Parental Psychological Control and Emotional and Behavioural Disorders among Spanish Adolescents. International Journal of Environmental Research and Public Health, 16, 507.

5.Baumrind, D. (1991). Effective Parenting during the early adolescent transition. In P.A. Cowan & E.M. Hetherington (Ed), Advances in Family research, 2, Hillsdale, NJ: Erlbaum.

6.Birmaher, B. (1996). Childhood and Adolescent Depression: A Review of the past 10 years. Part 1. Journal of the American Academy of child & Adolescent Psychiatry, 35(11), 1427-1439.

7.Blair-West, G.W., Mellsop, G.W., & Eyeson-Annan, M.L. (2010). Down-rating lifetime suicide risk in major depression. Acta Psychiatr Scand, 95, 259-263.

8.Bradley, R.H. & Caldwell, B.M. (1995). Caregiving and the regulation of child growth and development: Describing proximal aspects of caregiving systems. Developmental Review, 15(1), 38-85.

9.Dubey, L.N. (2006). Manual for Mental Depression Scale. Jabalpur, Arohi Manovigyan Kendra.

10. Fletcher, A.C., Walls, J.K., Cook, E.C., Madison, K.J., & Bridges, T.H. (2008). Parenting style as a moderator of associations between maternal disciplinary strategies and child well-being. Journal of Family Issues, 29(12), 1724-1744.

11. Gorostiaga, A., Aliri, J., Balluerka, N. & Lameirinhas, J. (2019). Parenting Styles and Internalizing Symptoms in Adolescence: A Systematic Literature Review. International Journal of Environmental Research and Public Health. 16, 3192; doi:10.3390/ijerph16173192.

12. Greenberg, P.E., Stiglin, L.E., Finkelstein, S.N., & Berndt, E.R. (2009). The economic burden of depression in 1990. J Clan Psychiatry, 54, 405-418.

13. Gupta, M. & Mehtani, D. (2017). Manual of Parenting Style Scale. National Psychological Corporation.

14. Hankin, L.B., Mermelstein, R., & Roesch, L. (2007). Sex Differences in Adolescent Depression: Stress Exposure and Reactivity Models. Child development, 78(1), 279-295.

15. Hoghuighi, M. & Long, N. (2004). A Handbook of Parenting: Theory and Research for Practices. London : Sage Publications Ltd.

16. Jinan, N., Yusof, N.A.M. binti M., Vellasamy, V., Ahmad, A., Rahman, M.N.B.A., & Motevalli, S. (2022). Review of Parenting Styles and Their Impact on the Adolescents Self-Esteem. International Journal of Academic Research in Progressive Education and Development, 11(2), 31-47.

17. Kessler, R.C., McGonagle, K.A., & Zhao, S. (2003). Lifetime and 12-month prevalence of DSM-IIIR psychiatric disorders in the United States. Results from the National Comorbidity Survey Arch Gen Psychiatry, 51, 8-19.

18. Kessler, R.C. & Bromet E.J. (2013). The epidemiology of depression across cultures. Annual review of public health, 34(1), 119-138.

19. Kopko, K. (2007). Parenting Styles and Adolescents. Cornell Cooperation Extension, Retrieved from

20. http://www.human.cornell.edu/pam/outreach/parenting/research/upload/Parenting-20styles-20and-20

21. adolescents.pdf

22. Kumari, Y. (2015). भारत का बदलता परिवेश : बदलती युवा जीवनशैली. Review of Research: Monthly Multidisciplinary Research Journal, 4(7), 1-5.

23. Luyckx, K., Tildesley, E.A., Soenens, B., Andrews, J.A., Hampson Rajan, O. & Rema, M.K. (2022). Influence of Perceived Parenting Style on Self Esteem among Adolescents. International Journal of Recent Scientific Research, 13(4), 932-935.

24. Rezvan, A. & D'souza, L. (2017). Influence of Parenting Styles on Mental Health of Adolescents. European Online Journal of Natural and Social Sciences, 6(4), 667-673.

25. Retrieved from https://hi.wikipedia.org/w/index.php? Title= किशोरावस्था & oldid = 4825242.

26. Robins, L. & Regier, D. (2004). Psychiatric Disorders in America. New York: Free Press.
27. Schaffer, M., Clark, S., & Jeglic, E. (2009). The role of empathy and parenting style in the development of antisocial behaviours. Crime & Delinquency, 55(4), 586-599.
28. Sharma, G. & Pandey, N. (2015). Parenting Styles and its Effect on Self-Esteem of Adolescents. The International Journal of Indian Psychology, 3(1), 3113-3116.
29. Singh, R.N., Quresi, A.N., & Bharadwaz, S.S. (2014-15). Foundations of Psychopathology (2nd Edition). Agra: Agrawal Publications.
30. Spera, C. (2005). A Review of the relationship among parenting practices, parenting styles, and adolescent school Achievement. Educational Psychology Review, 17(2). DOI: 10.1007/s 10648-005-3950-1.
31. Steinberg, L. (2001). We know some things: parent-adolescent relationships in retrospect and prospect. Journal of Research on Adolescence, 11(1), 1-19. Retrieved from http://www.comm.umn.edu/~akoerner/courses/4471-F12/Readings/Steinberg%202001.pdf
32. Sultana, S. & Ghose, A. (2013). Construction of a Scale on Perceived Parenting Style. International Journal of Humanities and Social Science Invention, 2(11), 55-66.
33. Thapar, A. (2012). Depression in Adolescence. The Lancet, 379(9820), 1056-1067.
34. Yasmin, S. (2019). Gender Differences between Parenting Styles on Academic Performance of Students. Science International (Lahore), 30(1), 59-62.